

अगामी जनवरी से जून की कृषि गतिविधियाँ

राजीव कुमार सिंह एवं जनार्दन सिंह

भा.कृ.अनु.सं., सस्य विज्ञान संभाग, नई दिल्ली

जैविक एवं प्राकृतिक खेती, चौ.स.कु. हि.प्र. कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर, हिमाचल प्रदेश

जनवरी: गेहूँ में दूसरी सिंचाई बोआई के 40–45 दिन बाद कल्ले निकलते समय और तीसरी सिंचाई बोआई के 60–65 दिन बाद गांठ बनने की अवस्था पर करें। बलुअट दोमट भूमि में नत्रजन की शेष एक तिहाई मात्रा अर्थात् 40 कि.ग्रा. नत्रजन की टॉप ड्रेसिंग दूसरी सिंचाई के बाद अवश्य कर दें। देर से बोई गयी गेहूँ में पहली सिंचाई बोआई के 18–20 दिन बाद करें, वहां भी सिंचाई के बाद एक/तिहाई नत्रजन का छिड़काव करना होगा। भारी मृदा में प्रति हैक्टेयर 60 किग्रा नत्रजन की टॉप ड्रेसिंग पहली सिंचाई के 4–6 दिन बाद और बलुई दोमट भूमि में 40 कि.ग्रा. नत्रजन की टॉप ड्रेसिंग पहली सिंचाई पर और 40 कि.ग्रा. नत्रजन की दूसरी टॉप ड्रेसिंग दूसरी सिंचाई के बाद प्रयोग करें। गेहूँ एवं जौ में खरपतवारों के नियंत्रण के लिये सल्फोसल्फयूरॉन 75 प्रतिशत, मैटसल्यूरॉन मिथाइल 5 प्रतिशत (टोटल) की 40 ग्राम या क्लोडिनाफॉप 15 प्रतिशत, मैटसल्यूरॉन मिथाइल 1 प्रतिशत वेस्टा 15 डब्ल्यू.पी. की मात्रा 400–500 लीटर पानी में घोलकर पहली सिंचाई के बाद, परन्तु 30 दिन की अवस्था से पूर्व प्रति हैक्टेयर छिड़काव करने से इन खरपतवारों से छुटकारा मिल सकता है। खेत में चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार हो तो, वे किसान भाई 625 ग्रा. 2,4-डी सोडियम साल्ट (80) या फिर 1.5 लीटर 2,4-डी एस्टर प्रति हैक्टेयर की दर से 600 लीटर पानी में घोलकर बोआई के 25–30 दिन बाद छिड़काव करें। मटर में बुकनी रोग (पाउडरी मिल्ड्यू) जिसमें पत्तियां तनों तथा फलियों पर सफेद चूर्ण सा फैल जाता है, जिसकी रोकथाम के लिए 3.0 कि.ग्रा. घुलनशील गंधक 800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर की दर से 10–12 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें। झुलसा रोग की रोकथाम के लिए प्रति हैक्टेयर 2.0 कि.ग्रा. जिंक मैग्नीज कार्बोमेट को 800 लीटर पानी में घोलकर फूल आने से पूर्व व 10 दिन के अन्तराल पर दूसरा छिड़काव करें। सिंचाई की सुविधा उपलब्ध होने पर दलहनी फसलों में पुष्प आने के पहले सिंचाई करना लाभप्रद होता है। चने की फसल में फली छेदक कीड़ा जिसकी गिडारें हल्के हरे रंग की होती हैं जो बाद में भूरे रंग की हो जाती हैं। ये फलियों को छेदकर अपने सिर को फलियों के अन्दर डाल कर दानों को खा जाती हैं। इसकी रोकथाम के लिये फली बनना प्रारम्भ होते ही मोनोक्रोटोफॉस 36 ई.सी. की 750 मि.ली. या फेनवेलरेट 20 ई.सी. की 500 मि.ली. मात्रा 600 से 800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर खेत में छिड़काव करें। फसल में पहला छिड़काव 50 प्रतिशत फूल आने के बाद करें।

यदि छिड़काव के लिये रसायन उपलब्ध नहीं हो तो मिथाइल पॅराथियान 2 प्रतिशत धूल की 25 कि.ग्रा. मात्रा का बुरकाव करें।

रबी की तिलहनी फसलों में राई-सरसों, अलसी और सूरजमुखी मुख्य है। सरसों में फली बनने की अवस्था में अगर जमीन में पानी की कमी हो तो उपज में 20 से 30 प्रतिशत की कमी आ जाती है। अतः यह जरूरी है कि किसान भाई उस अवस्था पर फसल की सिंचाई अवश्य करें। राई-सरसों में दाना भरने की अवस्था में दूसरी सिंचाई करें। यदि फसल में झुलसा या सफेद गेरुई रंग का रोग का प्रकोप हो तो जिंक मैग्नीज कार्बोमेट 75 प्रतिशत की 2.0 कि.ग्रा. या जीनेब 75 प्रतिशत की 2.5 कि.ग्रा. मात्रा को 800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। माहू कीट पत्ती, तना व फली सहित सम्पूर्ण पौधे से रस चूसता है। इसके नियंत्रण के लिए, प्रति हैक्टेयर फास्फेमिडान 85 प्रतिशत के 250 मिलीलीटर मात्रा को 800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। उक्त बीमारियों या माहू का प्रकोप एक साथ होने पर किसी एक फफूंदनाशक व एक कीटनाशक को मिलाकर प्रयोग किया जा सकता है।

आलू के पौधों पर मिट्टी चढ़ाएं। आलू में जनवरी के प्रथम सप्ताह तक हर हालत में पौधों के ऊपरी भाग को काट दें, उसके बाद आलू को 20–25 दिन तक जमीन के अन्दर ही पड़े रहने दें। ऐसा करने से आलू का छिलका कड़ा हो जायेगा और खराब नहीं होगा। आलू, टमाटर तथा मिर्च में पिछेली झुलसा तथा माहू से बचाव हेतु मैकोजेब 0.2 प्रतिशत के घोल का छिड़काव करें। गोभी वर्गीय सब्जियों की फसल में सिंचाई, गुड़ाई तथा मिट्टी चढ़ाने का कार्य करें। फूल गोभी के फूल उस समय काटने चाहिये जब वे ठोस, सफेद व धब्बे रहित बिलकुल साफ हों और फूल के साथ पत्तियों के कम से कम दो चक्र भी हों। बंद गोभी को तब काटें जब वह बंधी और कोमल हो। यदि कटाई में देर हो गई तो गांठें फट सकती हैं। पहले रोपे गये टमाटर के पौधों में सिंचाई व निराई-गुड़ाई व बांस की लकड़ी का सहारा (स्टेकिंग) देने का कार्य करें। पिछले माह रोपी गई टमाटर की उन्नत किस्मों में प्रति हैक्टेयर 40 कि.ग्रा. नत्रजन व संकर वाली किस्मों के लिए 55–60 कि.ग्रा. नत्रजन की प्रथम टॉप ड्रेसिंग रोपाई के 20–25 दिन बाद करें। टमाटर की ग्रीष्मकालीन फसल के लिए रोपाई कर दें। टमाटर की रोपाई के समय उन्नत प्रजातियों के लिए प्रति हैक्टेयर नत्रजन 40 कि.ग्रा. फास्फेट, 50 कि.ग्रा. पोटाश, 60–80 कि.ग्रा. जिंक व बोरान की कमी होने पर जिंक सल्फेट 20–25 कि.ग्रा. व बोरेक्स 8–12 कि.ग्रा. का प्रयोग करें।

संकर वाली किस्मों के लिए उर्वरक की अन्य मात्रा के साथ नत्रजन 55–60 कि.ग्रा. प्रयोग करना चाहिए।

टमाटर की ग्रीष्म ऋतु की फसल के लिए कम व अधिक बढ़ने वाले, दोनों प्रकार की प्रजातियों की रोपाई 60×45 से.मी पर करें। टमाटर में खरपतवार के नियंत्रण के लिए प्रति हैक्टेयर स्टाम्प 1.0 कि.ग्रा. (सकिय तत्व) रोपाई के दो दिन बाद प्रयोग करना चाहिए। जिस खेत में प्याज की रोपाई करना चाहते हों उसकी 2–3 बार जुताई करके पाटा चलाकर समतल कर लें। यदि मिट्टी की जाँच उपलब्ध न हो, तो रोपाई से 15–20 दिन पहले 20–25 टन गोबर की सड़ी हुई खाद डालें व रोपाई के समय नत्रजन 50 कि.ग्रा., फॉस्फोरस 50 कि.ग्रा. एवं पोटाश 80–100 कि.ग्रा. मिट्टी में मिलाए। अब तैयार खेत में लाईन से लाईन की दूरी 15 से.मी. एवं पौधे से पौधे के बीच की दूरी 10 से.मी. रखते हुये 2 से.मी. की गहराई पर रोपाई कर दें। रोपाई के समय खेत में नमी बनाये रखें एवं 3–4 बार हल्की सिंचाई करें। प्याज की रोपाई का काम भी किसान भाई इस महीने समाप्त कर लें। कद्दूवर्गीय सब्जियों की तैयारी के समय प्रति हैक्टेयर 200–300 कु. गोबर/कम्पोस्ट की सड़ी खाद या 70–80 कु. नादेप कम्पोस्ट भूमि में मिलाते हैं। बोआई से पूर्व प्रति हैक्टेयर नत्रजन 16–17 कि.ग्रा., फास्फेट 25 कि.ग्रा. व पोटाश 25 कि.ग्रा. आपस में मिलाकर बोने वाली नालियों के स्थान पर डालकर मिट्टी में मिला दें और थाले बनाकर उनमें 2–3 बीज की बोआई करें।

फरवरी: गेहूँ में समय से बोआई के हिसाब से दूसरी सिंचाई 40–45 दिन बाद यानि कल्ले निकलने की अवस्था, तीसरी सिंचाई 60–65 दिन (गांठ बनते समय) की अवस्था में तथा चौथी सिंचाई बोआई के 80–85 दिन बाद पुष्पा अवस्था तथा बाली निकलने की अवस्था में करें। समय पर बोई गई गेहूँ की फसल में फूल आने लगते हैं इस दौरान फसल को सिंचाई की बहुत जरूरत होती है। गेहूँ की फसल में गेरुई, करनाल बंट व झुलसा जैसी बीमारी दिखाई दे तो मैन्कोजेब दवा के 2 फीसदी वाले घोल का छिड़काव कर या स्फोटों के दिखाई पड़ने पर 0.1 प्रतिशत प्रोपीकोनेजोल (टिल्ट 25 ई.सी.) का एक या दो बार पत्तियों पर छिड़काव करें। जौ में यदि तीन सिंचाई उपलब्ध हो तो दूसरी सिंचाई बोआई के 55–60 दिन बाद गांठ बनने की अवस्था में और तीसरी सिंचाई दुधियावस्था में बोआई के 95–100 दिन बाद करें। खेत में यदि कण्डुवा रोगग्रस्त बाली दिखाई दे तो उसे निकाल कर जला दें।

असिंचित क्षेत्रों में चने की कटाई फरवरी के अन्त में होने लग जाती है। चने की फसल को फली छेदक कीटों से बचाव के लिए एच.ए.एन.पी.वी. 250 एल.ई./500 ली./है. पानी या लेम्डा साइहैलोथ्रिन 5 ई.सी. या इण्डोक्साकार्ब 14.5 एस.सी. 1 मि. ली./2 ली. पानी या मोनोक्रोटोफॉस (30 एस.एल.) 250 ग्रा. सक्रिय तत्व 500–600 लीटर पानी/है. की दर से 15 दिन के

अन्तराल पर 2 छिड़काव करें। चने की फसल में झुलसा रोग की रोकथाम के लिए जिंक मैग्नीज कार्बामेंट 2.0 कि.ग्रा. अथवा जीरम 90 प्रतिशत 2 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें। देरी से बोई गई मटर की फसल में फली आने पर सिंचाई करें। अगेती फसल पकने की अवस्था में होगी, अतः समय पर कटाई करें। मटर की फसल में पाउडरी मिल्ड्यू रोग (चूर्णिल आसितारोग) जिसमें पत्तियों तथा फलियों पर सफेद चूर्ण सा फैल जाता है। रोग के प्रारंभिक लक्षण दिखाई देखते ही सल्फरयुक्त कवकनाशी जैसे सल्फेक्स, को 2.5 कि.ग्रा./है. या 3.0 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर घुलनशील गन्धक या कार्बेन्डाजिम 500 ग्राम या ट्राइडोमार्फ 80 ई.सी. 500 मिलीलीटर की दर से 800–1000 लीटर पानी में घोलकर 15 दिन के अन्तराल में 2–3 बार फसल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करें। यदि जाड़े में वर्षा नहीं हुई तो हल्की सिंचाई अवश्य करें। असिंचित क्षेत्रों में सरसों की कटाई का समय है अतः फसल को समय पर काट लें तथा पेन्टेड बग (बगराडा, झारा, धोलिया, चितकबरा कीडा) कीट का नुकसान 4–5 पत्तियों की अवस्था तक अधिक रहता है। वयस्क कीट तथा उसका निम्फ पौधे के तने व पत्तियों से रस चूसते हैं जिससे पहले पत्ते सफेद से हो जाते हैं तथा बाद में मुरझाकर गिर जाते हैं। इस कीट का प्रकोप होने पर 2 प्रतिशत मिथाइल पैराथियान या 5 प्रतिशत मैलाथियान 20–25 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर की दर से भुरकाव करें। माहू कीट या राया-सरसों का चेंपा कीट बहुत छोटा हरा-पीला या भूरा काला रंग का होता है जो पौधे के तने, फूलों व फलियों से रस चूसता है तथा फसल को भारी नुकसान पहुँचाता है। जब कीट का प्रकोप औसतन 10 प्रतिशत पौधों पर या औसतन 25 कीट प्रति पौधा हो जाए तो मोनोक्रोटोफास 35 डब्लू. एस.सी. या डाइमेटोएट 30 ई.सी. या मिथाइल डिमेटान 25 ई.सी. या क्यूनलफास 25 ई.सी. या थायामिडान 25 ई.सी. 1000 मि.ली. या फास्फोमिडान 85 डब्लू. एस.सी. 250 मि.ली. या मैलाथियान 50 ई.सी. 1250 मिली. प्रति हैक्टेयर की दर से 500–800 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

टमाटर, आलू और मिर्च की फसल को पछेता झुलसा रोग तथा माहू से बचाने के लिए मैन्कोजेब 0.2 प्रतिशत (2 ग्राम/प्रति लीटर पानी) के साथ मोनोक्रोटोफास 0.04 प्रतिशत (4 मिलीलीटर 10 लीटर पानी में) के घोल का छिड़काव करें। टमाटर की ग्रीष्मकालीन फसल में रोपाई के 25–30 दिन बाद उन्नत किस्मों में प्रति हैक्टेयर 40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन (88 कि.ग्रा. यूरिया) व संकर असीमित बढ़वार वाली किस्मों के लिए 50–60 कि.ग्रा. नाइट्रोजन (120–130 कि.ग्रा. यूरिया) की प्रथम टॉप ड्रेसिंग करें। आलू के पत्ते काटने के बाद खुदाई करें, जिससे आलू का छिलका मजबूत हो जाता है। खुदाई करने के बाद आलू को छाया में ढेर लगाकर सुखायें और ऊपर से मिट्टी साफ करें। आलू की फसल पर पछेता झुलसा रोग दिखाई दे, तो इंडोफिल

दवा के 0.2 फीसदी वाले घोल का खड़ी फसल पर अच्छी तरह छिड़काव करें।

बैंगन की पौध तैयार है, तो रोपाई 60-45 सेंटीमीटर की दूरी पर करें। खेत की तैयारी के समय सड़ी हुई गोबर की खाद डालें। अच्छी फसल लेने के लिए 100 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 80 कि.ग्रा. फास्फोरस व 80 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टेयर की दर से प्रयोग करें। रोपाई का काम शाम के समय करें एवं रोपाई के तुरन्त बाद हल्की सिंचाई जरूर करें। प्याज में प्रति हैक्टेयर नाइट्रोजन की सम्पूर्ण 100 कि.ग्रा. मात्रा का 1/3 भाग (72 कि.ग्रा. यूरिया) रोपाई के 30 दिन बाद सिंचाई कर टॉप ड्रेसिंग करें। प्याज में पर्पिल ब्लाच बीमारी से बचाने के लिए 0.2 प्रतिशत मैकोजेब और थ्रिप्स कीट लगने पर 0.6 प्रतिशत फास्फेमिडान पानी में घोलकर छिड़काव करें। राजमा (फ्रेन्चबीन) में फलियाँ बनते समय दूसरी सिंचाई कर दें। फिर आवश्यकतानुसार भूमि में नमी की मात्रा कम होने पर हल्की सिंचाई करें।

भिण्डी की उन्नतशील प्रजातियां जैसे—पंजाब पदमिनी, परभनी क्रान्ति एवं पूसा सावनी अच्छी हैं। फरवरी माह में भिण्डी की बोआई के लिए 18-20 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर बीज पर्याप्त होता है। भिण्डी की बोआई 30-45, 20-30 सेंमी दूरी पर कतारों में करें। बोआई से पूर्व भिण्डी के बीज को 24 घण्टे पानी में भिगो देना चाहिए। भिण्डी की अच्छी फसल लेने के लिए 100-120 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 50 कि.ग्रा. फास्फेट व 50 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टेयर की आवश्यकता होती है। बोआई के समय फास्फोरस व पोटाश की सम्पूर्ण मात्रा तथा नाइट्रोजन की आधी मात्रा प्रयोग करें। बोआई के समय नाइट्रोजन की एक तिहाई मात्रा तथा फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा बीज बोने से पहले खेत में मिला दें।

लौकी की उन्नतशील प्रजातियां जैसे—पूसा मंजरी, पूसा समर, प्रोलीफिक लौंग, पूसा नवीन, आजाद हरित एवं मेघदूत आदि प्रमुख हैं। लौकी की बोआई 3-0.75 मीटर पर कर सकते हैं जिसके लिए प्रति हैक्टेयर 4-5 कि.ग्रा. बीज पर्याप्त होता है। बोआई 80-100 सें.मी. चौड़ी नाली बनाकर उसकी दोनों मेंदों पर दो बीज प्रति स्थान पर करें। खीरा की बोआई 1.5-2, 0.50-0.60 मीटर पर 30 सेंमी चौड़ी नाली बनाकर उसके दोनों मेंदों पर करें। इसके लिए प्रति हैक्टेयर 2-2.5 कि.ग्रा. बीज का प्रयोग करना चाहिए। खीरे की उन्नतशील प्रजातियां जैसे— पूसा संयोग, खीरा-75, जापानी लौंग ग्रीन, प्रिया व के.एच.3 आदि प्रमुख हैं। जिनका 2-2.5 किलोग्राम बीज प्रति हैक्टेयर की दर से पर्याप्त होता है। खीरे की बोआई 1.5-2×0.50 मीटर पर 30 सेंटीमीटर चौड़ी नाली बनाकर उसकी दोनों मेंदों पर करें। खीरे के लिए प्रति हैक्टेयर 60 किलोग्राम नाइट्रोजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस व 40 किलोग्राम पोटाश प्रयोग करें। तोरी की पूसा चिकनी, पूसा नसदार, पंजाब सदाबहार व कल्याणपुर चिकनी एवं करेला की

पूसा हाइब्रिड, पूसा दो मौसमी, पूसा विशेष, फ़ैजाबादी बारामासी, कोयम्बटूर लौंग, कल्याणपुर सोना व कल्याणपुर बारहमासी प्रमुख प्रजातियां हैं। चिकनी तोरी, धारीदारी तोरी व करेला की बोआई 40 सें.मी. चौड़ी नाली की दोनों मेंदों पर 2.5×0.60 मीटर की दूरी पर करनी चाहिए। इनके लिए 5-6 कि.ग्रा. बीज प्रति हैक्टेयर आवश्यक होता है। कद्दूवर्गीय सब्जियों की बोआई से पूर्व 100 कुन्तल गोबर की सड़ी खाद, 25-30 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 50-60 कि.ग्रा. फास्फोरस तथा 40 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टेयर की दर से प्रयोग करें। कद्दूवर्गीय सब्जियों की बोआई के लिए नाली की गहराई 15-20 सें.मी. रखनी चाहिए। सब्जी मटर में फलियां बनते समय खेत में हल्की नमी होना जरूरी है। मटर में बुकनी रोग की रोकथाम हेतु कैराथेन 600 मिलीमीटर या 2 किलोग्राम गंधक को 600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें। गोभीवर्गीय सब्जियों में सिंचाई, गुड़ाई तथा पौधों पर मिट्टी चढ़ाने का कार्य करें।

मार्च : गेहूँ में बुआई के समयानुसार पांचवी सिंचाई दानों की दुधिया अवस्था (100 से 105 दिन) पर और छठवीं सिंचाई व अंतिम सिंचाई दाना भरते समय बुआई के 115-120 दिन बाद करें। तेज हवा चलने की स्थिति में सिंचाई न करें अथवा रात में करें क्योंकि फसल गिरने का डर रहता है। पछेती गेहूँ की बुआई मध्य दिसम्बर के आसपास की गयी हो तो उनमें चौथी सिंचाई बाल निकलने की अवस्था और पांचवी सिंचाई दुधिया अवस्था पर करें। असिंचित क्षेत्रों में गेहूँ की कटाई व मड़ाई (थ्रेशिंग) का कार्य करें। गेहूँ की फसल में गेरुई, करनाल बंट व झुलसा जैसी बीमारी दिखाई दे तो मैन्कोजेब दवा के 2 फीसदी वाले घोल का छिड़काव कर या स्फोटों के दिखाई पड़ने पर 0.1 प्रतिशत प्रोपीकोनेजोल (टिल्ट 25 ई.सी.) का एक या दो बार पत्तियों पर छिड़काव करें। अनावृत कण्डुवे की रोगग्रस्त बाली जो खेत में जल्दी निकल आती है, दिखाई देते ही सावधानीपूर्वक उसे निकाल कर जला दें।

जौ में दाने की दूधियावस्था पर नमी की कमी से पैदावार में कमी हो सकती है, अतः सिंचाई का ध्यान रखें। पछेती जौ की बुआई में तीसरी व अंतिम सिंचाई दुधिया अवस्था में बुआई के 95-100 दिन बाद करें। जौ की फसल को पकने के तुरंत बाद ही काट लेना चाहिए जिससे फसल गिरने एवं दाने झड़ने से नुकसान कम हो। जौ का दाना हवा से नमी सोखता है अतः सही स्थान पर भंडारण करें ताकि कीड़ा न लगे। देरी से बोई गई सिंचित चने की फसल में यदि आवश्यकता हो तो दूसरी सिंचाई बुआई के 100 दिन बाद की जा सकती है। असिंचित क्षेत्रों में चने की फसल की कटाई एवं मड़ाई (थ्रेशिंग) का कार्य पूर्ण करें। असिंचित क्षेत्रों में चने की फसल की कटाई हसियाँ या शक्ति चालित यंत्रों से करते हैं एवं फसल की मड़ाई (थ्रेशिंग) हाथ से पीटकर, बैलों के द्वारा या थ्रेसर से कर सकते हैं या कम्बाइन के

द्वारा कटाई एवं मड़ाई का कार्य पूर्ण करें। दानों को तब तक सुखाया जाता है जब तक कि उसमें 10 से 12 प्रतिशत नमी रहे। मसूर में फली बनने की अवस्था में हल्की सिचाई करें। जब फलियाँ पक जायें (70–80 प्रतिशत फलियाँ सूखने जैसी अवस्था में आ जायें) तो फसल की कटाई कर लेनी चाहिए। फसल को खेत में सुखा कर दाने अलग कर लेने चाहिए। पकने के बाद फसल को अधिक समय तक खेत में खड़ी न रहने दें क्योंकि देर से कटाई करने पर फलियों से दाने छिटकने के कारण उपज की हानि होती है। मार्च में हरी मटर कम होने के साथ-साथ दाने वाली मटर की फसल तैयार हो जाती है। अगर मटर की फलियाँ सूख कर पीली पड़ जाएं, तो उन की कटाई कर लेनी चाहिए। गहाई करने के बाद मटर के दानों को इतना सुखाएं कि सिर्फ 8 फीसदी नमी ही बचे।

ग्रीष्मकालीन बैंगन में रोपाई के समय 50 कि.ग्रा. नत्रजन, 50 कि.ग्रा. फॉस्फोरस व 50 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टेयर की दर से प्रयोग करें तथा रोपाई 75×60 से.मी. की दूरी पर करें। टमाटर तथा बैंगन में फली छेदक कीट नियंत्रण हेतु कार्बरिल 2 ग्राम प्रति लीटर घोल का छिड़काव करें। ग्रीष्मकालीन टमाटर की फसल में रोपाई के 45–50 दिन बाद उन्नत किस्मों में 40 कि.ग्रा. नत्रजन तथा संकर किस्मों के लिए 40 कि.ग्रा. नत्रजन की दूसरी टॉप ड्रेसिंग करें। फफूंद रोग से रक्षा के लिए रोगों से नियंत्रण हेतु नियमित रूप से 600–800 ग्राम इंडोफिल एम-45 को 250 लीटर पानी में मिलाकर एक एकड़ खेत में 10–15 दिन के अंतर पर छिड़काव करें। सफेद मक्खी, हरा तेला एवं हड्डा बीटल की रोकथाम के लिए 400 मि.ली. मैलाथियान 50 ई.सी. को 250 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।

इस महीने प्याज लहसुन की तेजी से तैयार होती फसलों का खास खयाल रखना चाहिए। तैयार होती प्याजों व लहसुनों को नर्म खेत की जरूरत होती है, लिहाजा निराई-गुड़ाई कर के खेत को नर्म बनाएं। अगर जरूरी लगे तो खेत में यूरिया खाद डालें। फरवरी माह में बोयी गयी भिण्डी एवं लोबिया में बोआई के 30–35 दिन बाद प्रति हैक्टेयर 20 कि.ग्रा. नत्रजन की टॉप ड्रेसिंग करें। ग्रीष्मकालीन सब्जियों में भिण्डी, लोबिया, लौकी, तोरई, करेला, टिंडा, खरबूजा, तरबूज, ककड़ी, छप्पन कदमू, सीताफल की बोआई यदि पूरी नहीं हुई हो तो पूरी कर लें। सुनहरी हल्दी और खुशबूदार अदरक की बोआई के लिए मार्च का महीना अच्छा होता है। बोआई के लिए हल्दी व अदरक की स्वस्थ गांठों का इस्तेमाल करें। इन गांठों की बोआई 50×25 सेंटीमीटर की दूरी पर करें।

अप्रैल: गेहूँ की फसल इस महीने में पक कर तैयार हो जाती है। जब दाने सुनहरे सख्त होने लगे तथा दानों में 20–25% नमी हो, वह कटाई की सही अवस्था होती है। इस अवस्था के पहले या बाद में कटाई करने पर उपज में नुकसान होने की संभावना रहती है। कटाई-मड़ाई के बाद दानों को भली-भांति सुखाकर

भण्डारण करना चाहिए। भण्डारण के समय गेहूँ के दानों में 10–12% नमी होनी चाहिए। इससे भण्डारण के दौरान लगने वाले कीटों का प्रकोप कम होता है। गेहूँ को भण्डारण कीटों से सुरक्षित रखने के लिए, जी.आई. (टीन) की शीट से बने पात्र का प्रयोग करें और प्रति 10 कुन्तल बीज में एल्युमीनियम फास्फाइड की एक टिकिया का प्रयोग करें।

जौ भी गेहूँ के लगभग साथ ही कटाई के लिए तैयार होती है और मार्च के अंत या मध्य अप्रैल तक फसल पूर्णतः पक जाती है। इस समय दानों में नमी 18–20% होती है। सही समय पर जौ की कटाई न होने पर इसकी बाली टूटने का डर रहता है। कटाई-मड़ाई के बाद दानों को भली-भांति सुखाकर भण्डारण करना चाहिए। भण्डारण के समय इसके दानों में 10–12% नमी होनी चाहिए। इससे भण्डारण के दौरान लगने वाले कीटों का प्रकोप कम होता है। जौ के दाने कई बार हवा से नमी सोख लेते हैं इसलिए इसका भण्डारण शुष्क जगह पर करना चाहिए। रबी दलहनी फसलें ज्यादातर फरवरी से मार्च या अप्रैल तक काट ली जाती हैं। चना और मसूर की फसल में जब पौधे की पत्तियां गिरने लगती हैं, तना और फली भूरी या भूसे के रंग की होने लगाती हैं, साथ ही बीज सख्त हो कर, छनछनाहट की आवाज करने लगे और बीज में करीब 15% नमी होती है तो यह समय कटाई के लिए एकदम उपयुक्त होता है। आवश्यकता से अधिक फसल पकने पर फली से दाने झड़ने का डर रहता है। कटाई में देरी करने पर यदि दानों में नमी 10% या इससे कम हो जाती तो दाने झड़ने के साथ साथ उसके दाने टूटने की भी संभावना रहती है। जहाँ तक संभव हो दलहनी फसलों की कटाई सुबह के समय करनी चाहिए। इस समय फलियों के चटकने की संभावना कम रहती है।

इस समय तक रबी तिलहनी फसलों की कटाई हो चुकी होती है और अप्रैल के महीने में कुछ जगहों पर सरसों, अलसी, कुसुम की मड़ाई होनी होती है। इस समय मौसम में कई अनचाहे बदलाव आते हैं और खुले में फसल रखी होने पर कभी कभी बहुत नुकसान हो जाता है, अतः मड़ाई का कार्य फसल को ठीक प्रकार सुखाकर बिना किसी देरी के करना चाहिए। भण्डारण के लिए दानों में नमी 8–10% के लगभग होना चाहिए।

अप्रैल में सूरजमुखी की बुवाई भी कर सकते हैं वैसे तो मार्च के प्रथम पखवाड़े तक इसकी बुवाई हो जाती है किन्तु गेहूँ के बाद सूरजमुखी लेने पर अप्रैल में ही बुवाई कर सकते हैं। सूरजमुखी के लिए 8–10 कि.ग्रा. बीज को 60 से.मी. पंक्ति से पंक्ति और 20 से.मी. पौधे से पौधे की दूसरी पर बुवाई करते हैं। बीजोपचार के लिए एग्रोन 35 एस डी की 6.0 ग्राम मात्रा को प्रति किग्रा बीज से करते हैं।

इस महीने में कद्दूवर्गीय फसलें जैसे लौकी, तोरई, कद्दू, तरबूज, खरबूज, खीरा, ककड़ी प्रमुख सब्जी वाली फसलों की बुवाई करते हैं। इन फसलों की बुवाई के लिए अच्छी प्रकार से

पलेवा कर खेत की तयारी करनी चाहिए और बुआई के लिए आवश्यक सस्य क्रियाओं को अपनाना चाहिए। बुआई से पूर्व बीज को कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम/कि.ग्रा. बीज, साथ ही ट्राइकोडर्मा 4 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। कद्दूवर्गीय सब्जी की नर्सरी फरवरी में तैयार कर, मार्च-अप्रैल में पौध की रोपाई कर देनी चाहिए। लौकी की रोपाई 2×1 मी, तोरई 100×50 सें.मी. तथा करेले की रोपाई 150×60 सें.मी. की दूरी पर करनी चाहिए। कद्दूवर्गीय सब्जी में समेकित पोषक तत्व प्रबंध करना चाहिए। इसके लिए 200-250 कुंतल सड़ी गोबर की खाद या कम्पोस्ट प्रति हेक्टेयर के हिसाब से खेत की आखिरी जुताई के समय अच्छी तरह से मिला देना चाहिए, इसके लिए 120 कि. ग्रा. नत्रजन, 100 कि.ग्रा. फास्फोरस और 80 कि.ग्रा. पोटाश तत्व के रूप में देना चाहिए, नत्रजन की आधी मात्रा तथा फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा आखिरी जुताई के समय मिला देना चाहिए, नत्रजन की शेष आधी मात्रा खड़ी फसल में दो बार में प्रयोग करते हैं, जिससे की लगातार फसल की अच्छी पैदावार मिल सके।

इस समय प्याज और लहसुन भी खुदाई के लिए तैयार होने लगती है। जब ये परिपक्व हो जाती है तब कंदों की ऊपरी पर्त सुनहरी रंग की हो जाती है, उसी समय खुदाई करना उचित रहता है। पकने के समय प्याज की पत्तियां पीली पड़कर सूखने लगती हैं। खुदाई खिली हुई धूप में करनी चाहिए जिससे कंदों में नमी अधिक न होने पाये। कटाई पूर्व करीब 10-15 दिनों तक सिंचाई नहीं करनी चाहिए।

इस समय किसान भाइयों के पास सब्जी उत्पादन में, भिण्डी एक लाभदायक विकल्प है। भिण्डी की उन्नतशील प्रजातियों में आजाद भिण्डी 1, आजाद भिण्डी 2, आजाद भिण्डी 3, आजाद भिण्डी 4, परभनीक्रांति, वर्षा उपहार, पूसा ऐ 4, अरका अनामिका एवम् अरका अभय प्रमुख है। फूल एवं फल आने की स्थिति में भिण्डी में तना वेधक और फल वेधक कीट लगते हैं। इसके लिए कार्बोसल्फान 25 ई.सी. 1.5 लीटर 800-1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर के हिसाब हर 10 से 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करते रहना चाहिए, लेकिन यह ध्यान रखें जब छिड़काव इसका करें, इसके पूर्व भिण्डी की तोड़ाई कर लेना चाहिए, जिससे की रसायनों का बुरा प्रभाव खाने वालों पर न पड़ सके। साथ ही भिण्डी में येलोवेन मोजेक पीला रोग का नियंत्रण आवश्यक है, जिससे की फल पत्तियां और पेड़ पीला पड़ जाता है। इसके नियंत्रण हेतु रोग रहित प्रजातियाँ का प्रयोग करना चाहिए या मेलाथियान 50 ई.सी. को 1 लीटर को 800-1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर के हिसाब से हर 10 से 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करते रहना चाहिए, जिससे यह रोग उत्पन्न ही नहीं होता है।

बैगन में तना और फली बेधक कीटों से बचाव के लिए कार्बोसल्फान 25 ई.सी. 1.5 लीटर प्रति हेक्टेयर के हिसाब से

500-600 लीटर पानी में घोल कर प्रत्येक 10-15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करते रहना चाहिए।

मई: अप्रैल-मई में टमाटर के फलों को सफेद होने (सन बर्न) से बचाने के लिए सिंचाई के ठीक प्रबंध के साथ-साथ, 3-4 पंक्तियों के बीच में सनई या ढेंचा लगाएं और ऐसी किस्मों का चयन करें जिसमें अधिक पत्तियां होती हैं। अप्रैल-मई में बैगन की रोपाई की जाती है और इस मौसम में 10-15 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करें। बैगन में तना और फल भेदक एक गंभीर कीट है, इसके नियंत्रण के लिए 10 मीटर के अंतराल पर 100 फेरोमोन ट्रेप प्रति हेक्टेयर लगाकर वयस्क नर को पकड़कर नष्ट कर देना चाहिए। भिन्डी इस समय पुष्पन और फली विकास अवस्था में होती है, इस समय सिंचाई 8-10 दिन के अंतराल पर की जाती है। फली-भेदक कीड़े को नियंत्रण करने के लिए 50000 अंडा परजीवी ट्राइकोग्रामा की संख्या कार्ड की मदद से खेत में छोड़ने से इस कीड़े का प्रकोप काफी कम हो जाता है।

जून: धान की रोपाई के लिए नर्सरी तैयार करना: सामान्यतः एक हेक्टेयर खेत की रोपाई हेतु 30 से 35 कि. ग्रा. धान का बीज, पौध तैयार करने हेतु पर्याप्त होता है। एक हेक्टेयर क्षेत्रफल में धान की रोपाई के लिए 1/10 हेक्टेयर क्षेत्रफल में पौध तैयार करना पर्याप्त होता है। धान की नर्सरी की बुवाई का सही समय 15 मई से 20 जून तक उपयुक्त पाया गया है। नर्सरी लगाने के लिए खेत में पानी भरकर 2-3 बार जुताई करते हैं ताकि मिट्टी लेहयुक्त हो जाए तथा खरपतवार नष्ट हो जाएं। आखिरी जुताई के बाद पाटा लगाकर खेत को समतल कर सुखा लिया जाये। सतह पर पानी सूखने पर खेत को 1.0-1.5 मीटर चौड़ी तथा सुविधाजनक लंबी क्यारियों में बांट लें ताकि बुवाई, निराई और सिंचाई की विभिन्न सस्य क्रियाएं आसानी से कर सकें। क्यारियां बनाने के बाद पौधशाला में 50-55 मि. मी. पानी भर दें और बीजों को समान रूप से क्यारियों में बिखेर दें। अगले दिन सुबह खड़ा पानी निकाल दें और एक दिन बाद ताजा पानी से सिंचाई करें। यह प्रक्रिया 6-7 दिनों तक दोहराएं। इसके बाद खेत में लगातार पानी रखें, परंतु इस बात का ध्यान रखें कि किसी भी अवस्था में पौध पानी में डूबे नहीं। खेत में भी यदि खरपतवार ज्यादा हो तो बुवाई के 3-4 दिनों के भीतर ब्यूटाक्लोर (1.5 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व प्रति हेक्टेयर) मात्रा को 50 कि.ग्रा. रेत में मिला कर खेत में फैला देना चाहिए। 20 से 25 दिन में पौध इस तरह से रोपाई हेतु तैयार हो जाती है। अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में, विशेषकर जहाँ जल भराव होता है, वहां मक्के की बुवाई मेंडों पर करनी चाहिए। एक हेक्टेयर के लिए 20-22 कि.ग्रा. बीज को 60-70×20 से.मी. पर बुवाई करते हैं। बुवाई के 15-20 दिन पहले सड़ी हुई गोबर की खाद 6-8 टन/हे. की दर से प्रयोग करना चाहिए। सामान्यतः मक्का के लिए 120-150 कि.ग्रा. नत्रजन, 60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस और 40 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हे. की दर से प्रयोग करना चाहिए। साथ ही 25 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट/हेक्टेयर भी

बुवाई पूर्व प्रयोग करना चाहिए। बाजरा के लिए भली प्रकार खेत को तैयार कर वर्षा जल को मेडबन्दी कर पूर्ण उपयोग में लाएं। दीमक के प्रकोप को रोकने के लिए 20–25 कि.ग्रा. फोरेट को प्रति हे. उपयोग करना चाहिए। बाजरा की 4–5 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त होता है। इसको 50×10 से.मी. की दूरी पर लगाना चाहिए। वर्षा में देरी होने पर जून माह में 500–600 वर्ग मी में इसकी नर्सरी लगा सकते हैं और वर्षा के आगमन पर बाजरा के पौध की रोपाई कर सकते हैं। इसी प्रकार कोदो, चीना, मडुआ, रागी और सांवा फसलों की बुवाई के लिए भी तैयारी इस माह में शुरू करते हैं। कोदो की 10–12 कि.ग्रा. और अन्य मोटे अनाज वाली फसलों में 8–10 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग करते हैं। सोयाबीन की बुवाई के लिए 75–80 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर 45 से.मी. की पंक्ति से पंक्ति की दूरी पर बोते हैं। बीज को बोने से पहले फफूंदनाशी, 1 ग्राम वाबिस्टीन प्रति कि.

ग्रा. बीज के साथ राइजोबियम के एक पैकेट से 10 किलो बीज को उपचारित कर छाया में सुखाकर बुवाई करते हैं। सोयाबीन के लिए 20–25 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 60–80 कि.ग्रा. फास्फोरस तथा 40–50 कि.ग्रा. पोटाश के अतिरिक्त, 20–25 कि.ग्रा. गंधक भी आवश्यक है। खरपतवार नियंत्रण के लिए, बुवाई के तुरंत बाद 1 कि.ग्रा. पेंडीमेथालीन 700–800 लीटर पानी में घोल कर एक हेक्टेयर खेत में डालना चाहिए।

खरीफ प्याज के लिए 75–40–40–20 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर नत्रजन, फॉस्फोरस, पोटाश और सल्फर की संतुति की जाती है। कद्दू वर्गीय फसलों के लिए जून के महीने में वर्षा आने पर खीरा, ककड़ी, लौकी, तोरई, कद्दू, करेला, तरबूज, खरबूज, पेठा आदि की बुवाई की जाती है। लौकी और खीरे में 2.0–2.5 कि. ग्रा, जबकि तोरई, कद्दू, छप्पन कद्दू में 5–6 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर लगता है।